IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, October 2022
Impact Factor: 6.252

सीधी जिले (म.प्र.) मे पर्यटन के विकास की संभावनएँ एक : भौगोलिक अध्ययन

Narendra Choudhary[1] and Dr. K. S. Netam[2]
Research Scholar, Department of Geography[1]
Professor, Department of Geography[1]
Sanjay Gandhi Smriti Government (Autonomous) PG College, Sidhi, MP, India

सारांश :–

भारत में एक उद्योग के रूप में पर्यटन का विकास स्वतंत्रता के बाद ही शुरू हुआ और अब हमारी अर्थव्यस्था में इसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो चुकी है। पिछले कुछ वर्षो से पर्यटन की सुविधाओं के साथ–साथ यहां कारोबार भी लगातार बढ़ रहा है। विदेशों से यहां आने वाले पर्यटकों की संख्या भी लगातार बढ़ रही है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर (विन्ध्य) सीधी की पहचान अपने प्राकृतिक सौंदर्य सभ्यता के अवशेषों लोक –संस्कृति के विविध रंगों, धार्मिक स्थलों व वास्तुशिल्प के लिये है। प्रकृति प्रदत्त अनुकूल परिस्थितियों को देखते हुए देश के हृदय स्थल में स्थित सीधी को एक आदर्श पर्यटन क्षेत्र होना चाहिए था, किन्तु कुछ कारणों से ऐसा नही हो सका। विश्व पर्यटन संगठन के अनुसार पर्यटक वे लोग है जो "यात्रा करके अपने सामान्य वातावरण से बाहर के स्थानों में रहने जाते है। यह दौरा ज्यादा से ज्यादा एक साल के मंनोरंजन, व्यापार, अन्य उद्देश्यों से किया जाता है, यह उस स्थान पर किसी खास क्रिया से सम्बसंन्धित नही होता है।" पर्यटन व्यवसाय दुनिया भर में एक प्रकार की आरामपूर्ण गतिविधि के रूप में विकसित हो रही हैं जिसका उद्देश्य लोगों को सुविधाएँ प्रदान करने के साथ.–साथ धन अर्जित करना व लोगों को रोजगार प्रदान भी करना भी हो गया है। सीधी एक रियासत है जिसके बारे में यहां के पर्यटन स्थल व मनमोहक जगलों, नदियाँ, तालाबों व प्राचीन मंदिरों तथा यहां की इमारतों व वन्य प्राणियों को देखकर आसानी से बताया जा सकता है।

बीज शब्दः पर्यटन व्यवसाय, आकर्षण, जीविकोपार्जन, दर्शनीय आदि प्रमुख शब्दों का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तावनाः

भारत एक विशाल देश है, इस बात का परिचय हमें यहॉ विद्यमान पर्यटन स्थलों से मिलता है। पर्यटन यहॉ एक बेहतर उद्योग के रूप में विकसित हुआ है, यद्यपि इस उद्योग में कुछ समय पूर्व मन्दी रही क्योंकि महामारी और आतंकवाद के कारण भारतीय परिस्थितियॉ खराब थी तथापि अब यह पुनः पर्यटर्को को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। इस श्रेणी में विंध्य प्रदेश भी पिछे नही है, यहॉ के जंगलों में जगंली जानवार देखने

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, October 2022
Impact Factor: 6.252

के लिए देश विदेश से यहां पर लोग आते है साथ ही आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। यहां पर खुलने वाले होटलों विश्राम गृहों, जल पान गृहों आदि ने पर्यटन व्यवसाय के प्रति जागरूकता को स्पष्ट किया है। इस प्राकर पर्यटन के क्षेत्र में जैसे–जैसे विस्तार होता जायेगा, वैसे ही वैसे लोगों को अधिकाधिक रोजगार के अवसर प्राप्त होगें तथा क्षेत्र का आर्थिक विकास भी होगा।

पर्यटन व्यवसाय का अर्थः

पर्यटन एक ऐसी यात्रा है जो मनोंरंजन या फुर्सत के क्षणों का आनंद उठाने के उद्देश्यों से की जाती है। विश्व पर्यटन संगठन के अनंसार पर्यटक वे लोग है जो यात्रा करके अपने सामान्य वातावरण से बाहर के स्थानों में रहने जाते है, यह दौर ज्यादा से ज्यादा मनोंरंजन के लिए व्यापार और अन्य उद्देश्यों से किया जाता है। यह उस सीान पर किसी खास क्रिया से सम्बन्धित नही होता। पर्यटन व्यवसाय आज के समय में किसी देश की आय का एक प्रमुख स्त्रोत बन गया है। पर्यटन व्यवसाय का अर्थ है पर्यटन स्थल पर ही जीविकोपार्जन की सम्पूर्ण सुविधाएँ उपलब्ध कराने के साथ–साथ विभिन्न लाभकारी व्यवसायों का संचालन करना व धन अर्जित करना है। इस प्रकार पर्यटन व्यवसाय आज के समय में एक प्रमुख व्यवसाय के रूप में उभरकर आया है।

पर्यटन उद्गम एवं विकासः

अतीत को जानना उसके बारे में जिज्ञासा रखना मनुष्य की स्वभावगत प्रवृत्ति रही है। हम यों भी कह सकते है। कि अतीत को जाने बिना भविष्य की राह का समुचित निर्धारण नही किया जा सकता इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि घर से बाहर निकलने के विचार ने ही यात्रा को जन्म दिया और इसी से आधुनिक पर्यटन का विकास हुआ भ्रमण या पर्यटन का इतिहास जितना पुराना रहा है उतना ही रोमांचक और रोचक भी घूमने–फिरने क्रिया सभ्यता के विकास से जुड़ी रही है। सभ्यता के विकास को भ्रमण या यात्रा से पृथक नही किया जा सकता फर्क इतना है कि सभ्यता का इतिहास शासक वर्ग से अधिक जुड़ा रहा है। यात्रा का का इतिहास आम जानता का इतिहास है इस इतिहास की कहानी हम सब की कहानी है।

पर्यटन (यात्रा) की गथा में साहस, जिज्ञासा, आनंद की खोज, अध्यात्म, व्यवसाय आदि के अनेक रोचक वृतांत समाएँ हुएँ है। कोलंबस ने साहसिक खत्रा के जरिए अमेरिका की खोज कर ली तो वॉस्कोडीगामा ने भारत को खोज निकाला। ह्वेनसांग, फाह्यान, मेगस्थनीय आदि ने दुर्गम राहें तय करते हुएँ भारत आकर बौद्ध दर्शन समेत अनेक प्रकार का ज्ञान प्राप्त किया। इस प्रकार से पर्यटन शब्द का उद्गम हुआ।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, October 2022
Impact Factor: 6.252

शोध के उद्देश्य:

- पर्यटन व्यवसाय के क्षेत्र में अधिकाधिक रोजगार के अवसरों का सृजन करना।
- पर्यटन व्यवसाय के माध्यम से देश के राजकीय कोश में वृद्धि करना।
- आर्थिक विकास में सहायता प्रदान करने के लिए पर्यटन व्यवसाय को बढ़ावा देना।
- विदेशी मुद्रा अर्जित करने के उद्देश्य से ।
- व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा को कम करने व पर्यटन व्यवसाय को विकसित करने के लिए ।

शोध प्रविधि:

"ज्ञान की खोज के लिए प्रयोग में लाई गई प्रविष्ट तरीके की प्रक्रिया को शोध प्रविधि कहा जाता है।" यह एक प्रकार की वैज्ञानिक प्रविधि है जो कि किसी भी शोध कार्य को करने के लिए प्रयोग मे लाई जाती है। इस शोध पत्र को तैयार करने मे द्वितीयक समंको वाली प्रविधि को प्रयोग किया गया है। शोध प्रविधि किसी भी शोध पत्र को तैयार करने के लिए अति महत्वपूर्ण होती है बिना शोध प्रविधि के शोध कार्य के विषय में सोचना तक गलत होता है।

सीधी जिले के प्रमुख:

सीधी जिला भारत के मध्य प्रदेश राज्य के आदिवासी जिलों में से एक है। सीधी एक शहर और नगरपालिका है, यह सीधी जिले का मुख्यालय है। यह जिला, रीवा संभाग का हिस्सा है। सीधी जिला मध्य प्रदेश राज्य के गौरवपूर्ण इतिहास का प्रतिबिंब है, यह राज्य की उत्तर–पूर्वी सीमा बनाता है। सीधी जिला प्राकृतिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक इतिहास का भंडार है। यह जिला कलकल बहने वाली नदी सोन के साथ शानदार प्राकृतिक संसाधनों के लिए जाना जाता है। एक तरफ अपनी आदिवासी सामाजिक–सांस्कृतिक विविधता और आदिवासी जातीय इतिहास के वर्णक्रम के साथ, जिले में कैमूर, केहजुआ और रानीमुंडा पहाड़ियों के मनोरम दृश्य हैं, जो महुआ के फूलों की मीठी गंध से घने जंगल की आंच के फूलों से नहाते हैं।

इतिहास:

यह बीरबल का जन्मस्थान है। क्षेत्र में स्थित संजय–दुबरी टाइगर रिजर्व व संजय राष्ट्रीय उद्यान है जो यहां के शेरों की भव्यता को बताता है। एक रिज़ॉर्ट भी है दृश्य पर्सिली।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, October 2022
Impact Factor: 6.252

पुरातत्व व इतिहासः

सीधी मध्यप्रदेश का हिस्सा है, इसकी छवि गौरवशाली इतिहास और कला की है। सीधी, राज्य की उत्तर–पूर्वी सीमा में स्थित है। सीधी को इसके प्राकृतिक सौंदर्य, ऐतिहासिक महत्व और सांस्कृतिक कला के लिए जाना जाता है। सीधी प्राकृतिक संसाधनों से भरा हुआ है, सोन नदीं यहाँ से गुजरती है। संजय राष्ट्रीय उद्याान दुबरी में जो सीधी मुख्यालय से 80 कि.मी. की दूरी पर दक्षिणी छोर में स्थित है । राष्ट्रीय अम्यारण्य भी है जो बगदरा में है। सोन नदी में सोन घडियाल भी है। गोपद बनास तहसील क्षेत्र में घोघरा देवी का मन्दिर है जहां प्रतिवर्ष नवरात्रि में मेला लगता है,माना जाता है अकबर के नौ रत्नों में से एक बीरबल का जन्म भी यहीं हुआ था। इस जिले के भवरसेंन मे वाणभट्ट का जन्म हुआ माना जाता है ।

1. सिहावल एवं बघोर पुरापाषाण अवशेष क्षेत्रः

इस जिले के सिहावल एवं बघोर क्षेत्र में खुदाई से उच्च पुरापाषाण काल (लगभग 40,000 वर्ष प्राचीन) से संबंधित अनेक औजारों के अवशेष प्राप्त हुए हैं। सोन घाटी का यह क्षेत्र पुरातात्विक शोध के क्षेत्र में अपना अलग महत्त्व रखता है।

2. चंद्रेह शैव मंदिर व मठः

जिले के रामपुर नैकिन में चंद्रेह ग्राम में 972 ई. में निर्मित प्राचीन शैव मंदिर एवं मठ स्थित हैं। यह मंदिर चेदि शासकों के गुरु प्रबोध शिव, जो मत्त–मयूर नामक प्रसिद्ध शैव संप्रदाय से संबंधित थे, ने साधना व शैव सिद्धांत के प्रचार हेतु स्थापित किया। मंदिर से जुड़ी हुई संरचना बालुका पत्थर से निर्मित एक मठ है जिसमें इसके निर्माण काल से संबंधित दो प्राचीन संस्कृत शिलालेख लगे हैं। इस संप्रदाय द्वारा अनेक मंदिर स्थापित किये गये जिनमें कदवाहा मंदिर, अशोकनगर व सुरवाया मंदिर, शिवपुरी प्रमुख हैं। चंद्रेह शैव मंदिर सोन एवं बनास नदी के संगम के निकट स्थित है व वर्तमान में भारतीय पुरातात्विक सर्वे द्वारा संधारित है। यह मंदिर पर्सिली रिसॉर्ट से लगभग 60 किमी की दूरी पर है।

भाषाएँ व बोलियाँः

हिंदी अपने क्षेत्रीय अंतरों व बोलियों के साथ इस क्षेत्र की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। सीधी में बोली जाने वाली बोलियों में सर्वप्रमुख है बघेली जिसकी हिंदी भाषा के साथ शाब्दिक समानता लगभग 72 से 91ः तक है। यह बघेलखण्ड के 78,00,000 लोगों द्वारा बोली जाती है। इसके अतिरिक्त गोंडी, जो एक प्राचीन बोली है गोंड जनजाति के लगभग 2,00,000 लोगों द्वारा बोली जाती है। लिपि सामान्यतः देवनागरी प्रयुक्त की जाती है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, October 2022
Impact Factor: 6.252

सीधी जिले की जनसंख्या:

- जनसंख्या 2011 जनगणना के अनुसार जिले की जनसंख्या 11,27,033 है।
- जिले में महिलाएं 5,51,121 की आबादी है।
- जिले में स्त्री पुरूष का अनुपात 952 है।
- जिले में साक्षरता का प्रतिशत 64.4 हैं
- पुरूष साक्षरता की दर 74.4 और महिला साक्षरता 54. है।
- शहरी क्षेत्रों में साक्षरता का प्रतिशत 78.7 और ग्रामीण क्षेत्रों 63.1 है।

सीधी जिले की प्रशासनिक व्यवस्था:

- सीधी जिला 7 तहसीलों में विभक्त है **गोपदबनास, सिंहावल, कुसमी, मझौली, रामपुर नैकिन, चुरहट और बहरी है।**
- जिले को तीन प्राकृतिक भागों में विभक्त किया गया है।
- सीधी जिले में 5 विकासखण्ड सीधी, सिंहावल, कुसमी, मझौली और रामपुर नैकिन है।

पर्यटन स्थाल:

सोन नदी की घाटी:

यह घाटी क्षेत्र कैमोर श्रेणी के दक्षिण भाग में फैली हुई है। कैमोर श्रेणी के दक्षिण में विन्ध महा समूह की चट्टानों के मध्य से साने नदी उत्तर से पूर्व की लगभग 165 किलोमीटर लम्बाई में प्रवाहित होती है। सीधी जिले का लगभग 10 प्रतिशत भाग इस घाटी में समाहित है। यह घाटी पश्चिम से पूर्व की ओर सक्रिय होती है। इसका अधिकांश भाग समतल एवं उपजाऊ है। इस घाटी का ढाल पश्चिम से पूर्व की ओर है। इस नदी घाटी की औसत ऊँचाई लगभग 300 किलोमीटर है।

सिहावल एवं बघोर पुरापाषाण अवशेष:

इस जिले के सिहावल एवं बधोर क्षेत्र में खुदाई से उच्च पुरापाषाण काल (लगभग 4,000 वर्ष प्राचीन) से संबंधित अनेक औजारों के अवशेष प्राप्त हुए है। सोन घटी क्षेत्र पुरातात्विक शोध के क्षेत्र में अपना अलग महत्व रखता है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, October 2022
Impact Factor: 6.252

चंद्रेह शैव मंदिर व मठः

- जिले के रामपुर नैकिन में चद्रेह ग्राम में 972 ई. में निर्मित प्राचीन शैव मंदिर एवं मठ स्थित है। यह मंदिर चेदि शासकों के गुरू प्रबोध शिव, जो मत्त–मयूर नामक प्रसिद्ध शैव संप्रदाय से संबंधित थे, ने साधना व शैव सिद्धांत के प्रचार हेतु स्थापित किया।
- मंदिर के जुड़ी हुई संरचना बालुका पत्थर से निर्मित एक मठ है जिसमें इसके निर्माण काल से संबंधित दो प्राचीन संस्कृत शिलालेख लगे है।
- इस संप्रदाय द्वारा अनेक मंदिर स्थापित किये गये जिनमें कदवाहा मंदिर, अशोकनगर व सुरवाया मंदिर, शिवपुरी प्रमुख है। चंद्रेह शैव मंदिर एवं बनास नदी के संगम के निकट स्थित है व वर्तमान में भारतीय पुरातात्विक सर्वे द्वारा संधारित है। यह मंदिर पर्सिली रिसॉर्ट से लगभग 60 किमी0 दूरी पर है।

संजय–दुबरी राष्ट्रीय उद्यान व टाइगर रिजर्वः

- जिले के जैव–विविधतापूर्ण वन क्षेत्र को संरक्षित करने की दृष्टि से संजय–दुबरी राष्ट्रीय उद्यान व टाइगर रिजर्व की स्थापना 1975 में की गई। सदाबहार साल वनों का यह क्षेत्र 152 पक्षी, 32 स्तनधारी, 11 सरीपृप, 3उभयचर व 34 मत्स्य प्रजातियों समेंत अनेक जीवों विशेषकर बाघों का आश्रय स्थल है।
- सफेद बाघों में सबसे प्रथम बाघ "मोहन" यहीं पाया गया था।बाघों के साथ ही यहां स्लोथ भालू, चीतल,नीलगाय, चिंकारा, सांबर, तेंदुआ, धोल, जंगली बिल्ली, हाइना, साही, गीदड़, लोमड़ी, भेड़ियां, पाइथन, चौसिंघा और बार्किंग डियर पाए जाते है।
- संजय राष्ट्रीय उद्यान जो संजय–डुबरी टाइगर रिजर्व का एक हिस्सा है, घूमने के लिए सबसे लोकप्रिय स्थान है।
- टाइगर रिजर्व में संजय राष्ट्रीय उद्यान और दुबरी वन्यजीव अभयारण्य शामिल है, दोनों 831 वर्ग किमी0 से अधिक क्षेत्रफल को कवर करते है और सीधी जिलें में स्थित है। यह क्षेत्र अपने बड़े आकार और समृद्ध जैव विविधता के साथ प्रसिद्ध है। इसमें साल, बांस और मिश्रित वन है।

कैसे पहुंचें :

बाय एयर

- समीपस्थ हवाईतल– प्रयागराज, उत्तर प्रदेश (157 किमी0)

रेल (ट्रेन) द्वारा

- मड़वासग्राम (MWJ),मझौली, सीधी (40किमी0) • रीवा (87 किमी0) • सतना (142 किमी0)

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, October 2022
Impact Factor: 6.252

सड़क के द्वारा

- सीधी राष्ट्रीय राजमार्ग 39 व अन्य मार्गों से समुचित रूप से जुड़ा हुआ है ।

सोन घड़ियाल अभ्यारण्य:

सोन घड़ियाल अभयारण्य प्रोजेक्ट क्रोकोडाइल के अंतर्गत घड़ियाल संरक्षण व जनसंख्या वृद्धि हेतु स्थापित किया गया। सोन नदी का 161 किमी, 23 किमी बनास नदी व 26 किमी गोपद नदी का क्षेत्र मिलाकर कुल 210 किमी क्षेत्र को 1981में अभयारण्य के रूप में घोषित किया गया। रेतीले पर्यावास (जैसे रेतीले तट, नदी द्वीप आदि) अनेक संकटग्रस्त जीवों जैसे घड़ियाल, भारतीय नर्म खोल कछुए (Chitra Indica), भारतीय स्किमर (Rynchops albicollis) आदि हेतु प्रमुख आश्रय स्थान हैं। अभयारण्य में दर्ज लगभग 101 पक्षियों की प्रजातियां इसे जलीय व पक्षी जैव विविधता से भरपूर बनाती हैं।

कैसे पहुंचें:

बाय एयर

- समीपस्थ हवाईतल– बम्हरौली, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश (157 किमी0)

रेल (ट्रेन) द्वारा

- मड़वासग्राम (MWJ),मझौली, सीधी (40किमी0) • रीवा (87 किमी0) • सतना (142 किमी0)

सड़क के द्वारा

- सीधी राष्ट्रीय राजमार्ग 39 व अन्य मार्गों से समुचित रूप से जुड़ा हुआ है ।

पर्सिली रिसॉट:

पर्सिली रिसॉर्ट, जो मझौली तहसील के पास सीधी मुख्यालय से 60.0 किमी (37.3 मील) दूर है । जिले के मझौली विकासखंड में बनास नदी के तट पर स्थित पर्सिली रिसॉर्ट रेतीले तटों और हरियाली का सुन्दर दृश्य समेटे हुए है। यह संजय राष्ट्रीय उद्यान व टाइगर रिज़र्व के प्रारम्भ बिंदु पर स्थित है व बालू तट पर नंगे पाँव सैर, सफारी व पक्षीदर्शन के लिए प्रसिद्ध है। यह रिसॉर्ट मध्यप्रदेश पर्यटन विकास निगम द्वारा संधारित है व एक सुखद व स्मरणीय अनुभव के लिए ऑनलाइन माध्यम से बुक किया जा सकता है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, October 2022
Impact Factor: 6.252

कैसे पहुंचें:

बाय एयर

- समीपस्थ हवाईतल– बम्हरौली, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश (157 किमी0)

रेल (ट्रेन) द्वारा

- मड़वासग्राम (MWJ),मझौली, सीधी (40किमी0) • रीवा (87 किमी0) • सतना (142 किमी0)

सड़क के द्वारा

- सीधी राष्ट्रीय राजमार्ग 39 व अन्य मार्गों से समुचित रूप से जुड़ा हुआ है ।

रुचि के स्थान एवं समीपवर्ती पर्यटन केंद्र:

- संजय राष्ट्रीय उद्यान, जो संजय–डुबरी टाइगर रिजर्व का एक हिस्सा है, घूमने के लिए सबसे लोकप्रिय स्थान है।
- बगदरा अभ्यारण्य के पास सोन नदी।
- पर्सिली रेस्ट हाउस, जो मझौली तहसील के पास सीधी मुख्यालय से 60.0 किमी दूर है। परिवेश देखने के लिएरू रामपुर गांव, ब्लॉक कुसमी, और टिकरी रेस्ट हाउस में वरचर आश्रम, जो सीधी से 40.0 किमी दक्षिण में है।
- घोघरा देवी मंदिर और बिरबल का जन्म स्थान (अकबर का नवरत्न)
- मांडा की गुफाएँ, सिंगरौली

पर्यटन स्थालो की प्रमुख समस्याए :

- **पर्यटन स्थल में पेयजल (पानी) की समस्या:** सीधी जिले में पर्यटन स्थल में पेयजल की समस्या एक बड़ी चुनौती के रूप में है। यहां के लोग इस तपती गर्मी में गर्म पानी पीने को मजबूर है या बोतल बंद पानी खरीदने को यहां भटकना पड़ता हैं। गर्मी को लेकर सीधी जिले के अधिकांश कुएं व तालबों के पानी गर्मी के समय में सूख जाते है। जिसके परिणाम स्वरूप यहां के लोगो को पेयजल की समस्या का समना करना पडता है। जिले में जिला अधिकारी द्वारा बेहतर तरीके से पहल करना होगा तब ही पेयजल की समस्या का निदान संभव है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, October 2022
Impact Factor: 6.252

- **पहुँच मार्ग की सही व्यवस्था नहीः** यातायात व्यवस्था का उपलब्ध न होने के वजह से जिले के आस–पास के पर्यटन स्थल है वहां पहुँचने के लिए सार्वजनिक वाहन बहुत कम उपलब्ध है तथा सड़को की स्थिति बहुत खराब है।
- **रूकने की व्यवस्था नहीः** सीधी जिले में बहुत सारे पर्यटन स्थल है पर सभी जगह पर ठहरने की कोई व्यवस्था नही है यहाँ पर अगर रात हो गए तो वापस शहर तक आना पड़ता है प्रशासन को चाहिए कि सभी प्रमुख पर्यटन स्थल में ठहरने की उचित व्यवस्था की जाए जिससे पर्यटकों को गर्मी में धूप से और सर्दी में ठंड से बचा जा सके।
- **रूकने की व्यवस्था नहीः** खाद्य पदार्थो का उपलब्ध न होना सीधी के अधिकांश पर्यटन स्थलों में कोई होटल या ढाबा नही यदि कोई पर्यटक पर्यटन सौन्दर्य के साथ–साथ स्वादिष्ठ व्यंजन का लाभ उठाना चाहे तो वह अपने घर से ही खाना पीने की स्वयं की व्यवस्था करना पड़ता है।
- **चिन्तनात्मक विकासः** प्रत्येक राज्य अथवा देश को अपना एक विशेष मानवीय एवं भौतिकीय सौन्दर्य होता है। वस्तुतः प्रत्येक देश का सौन्दर्य वहाँ का प्राकृतिक वातावरण ऐतिहासिक स्थल संस्कृति एवं सभ्यता अधिक होता है और इसी आकर्षण के वशीभूत ही लोग विभिन्न देशों अथवा राज्यों में भ्रमण हेतु जाते है। वास्तव में यही पर्यटन है पर्यटन को उद्योग का दर्जा देने के पश्चात् सरकार की मुख्य कोशिश रही है कि इससे अधिक से अधिक विदेशी मुद्रा को प्राप्त कि जाए। उसने उदार नीति अपनाई और पर्यटन को अधिक बढावा देने के लिए अनेक रियायतें दी। इन रियायतों व सुविधाओं के मिलनें पर अनेक उद्योगपति इस व्यापार की तरफ आकर्षित हुए और उन्होने संसाधनों का आत्याधिक दोहन शुरू कर दिया। परन्तु आज पर्यटन उद्योग की यह कामधेनु पर्यावरण नष्ट करने वाली साबित हो रही है। स्थिति यह हो गई कि सरकार को स्वयं नही मालूम कि पर्यटन उद्योग संबंधी रियायतो की सीमा क्या होनी चाहिए। पर्यटन पर्यावरण के साथ ही स्थानीय संस्कृति और परम्परा को नष्ट–भ्रष्ट कर रहा है। इस प्रकार पर्यटन औपनिवेशिक शोषण का ही नया माध्यम बन गया है।

उपसंहारः

हमारे पास पर्यटकों को आकर्षित करने कि तकनीक जरूर है किन्तु इससे भविष्य में उपजने वाली अनेकोनेक समस्याओं का सामना करने और उनसे निपटने की तकनीक उपलब्ध नही है। सवाल यह है कि इस समस्या से उबरने के क्या उपाय है ? यह स्पष्ट हो चुका है कि इस समस्या के घनीभूत होने के कारण क्या है ? वहा आवश्यकता इस बात कि है कि पर्यटन के क्षेत्र में विद्यमान समस्याओं को दूर रकरने हेतु ठोस कदम उठाये जाए ताकि पर्यटन के विकास के साथ–साथ मानव जीवन एवं पर्यावरण के साथ खिलवाड़ न हो सके।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, October 2022
Impact Factor: 6.252

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1]. Majit Husain - Human Geography 3/2010

[2]. A.K Bhatia - Tourism Development Principle & Practices

[3]. Savindra Singh - Environmental Geography (Prayag Pustak Bhawan Allahabad)

[4]. Devashish Das Gupta - Tourism Marketing

[5]. Roy. A. Cook - Tourism The Business of Travel (Pearson publication)

[6]. John R. Walkar - Tourism Concepts and Practices (Pearson publication)

[7]. K.L. Batra - Problems and Prospects Of Tourism (Print well publisher Jaipur 1990)

[8]. Truman A Hartshorn - Economic Geography

[9]. Savindra Singh - Oceanography

[10]. Pran Nath Seth - An Introduction to travel and tourism

[11]. Albert-Pinole, I. (1993) 'Tourism in Spain'. In Pompl, W. and Lavery, P. (eds) (1993):242–261.

[12]. Alipour, H. (1996) 'Tourism development within planning paradigms: the case of Turkey', Tourism Management, Vol. 17 No. 5:367–377.

[13]. Ap, J. (1992) 'Residents' perceptions on tourism impacts', Annals of Tourism Research, Vol. 19 No. 4:665–690. Archer, B.H. (1989) 'Tourism and island economies: impact analyses'. In Cooper C.P. (ed.) (1989):125–134.

[14]. Ashworth, G.J. (1991) 'Products, places and promotion: destination images in the analysis of the tourism industry'. In Sinclair, M.T. and Stabler, M.J. (eds) (1991):121–142.

[15]. Ashworth, G.J. and Dietvorst, A.G.J. (eds) (1995) Tourism and Spatial Transformations, Wallingford: CAB International.